AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

राजस्थान जेल प्रहरी

भर्ती परीक्षा

- मानसिक विवेचना एवं तार्किक योग्यता
- सामान्य ज्ञान एवं सामान्य विज्ञान
- राजस्थान सामान्य ज्ञान

विगत प्रश्न पेपर्स का हल सहित संकलन

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

विशेषताएँ:

1.सरल भाषा एवं व्यावहारिक उदाहरणों का संकलन

2.संपूर्ण पाठ्यक्रम एवं नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित

3. परीक्षोपयोगी संभावित प्रश्नोतरों का संग्रह

4. NCERT एवं RBSE की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित पाठ्यसामग्री

आसान, सटीक एवं संपूर्ण अध्ययन अब एक ही पूस्तक से !

MRP :₹440

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 6376957258, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

जेल प्रहरी परीक्षा की स्कीम

प्रश्न-पत्र	प्रश्न संख्या	कुल अंक	समय
1. विवेचना एवं तार्किक योग्यता	45	180	2 घण्टे
2. सामान्य ज्ञान/सामान्य विज्ञान/सामाजिक विज्ञान एवं सम-सामयिक	25	100	
3. राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, कला, भूगोल इत्यादि	30	120	
कुल योग	100	400	

नोट :-

1- Objective Type Question Paper.
2- Maximum Marks: 400
3- Number of Questions:100
4- Duration of Paper: Two Hours.
5- Each Question will carry 4 Marks.
6- Negative Marking 1 Mark will be deducted for each wrong answer.
7- The minimum qualifying marks shall be 36%.
8- Any question/queries related to the syllabus up to 10th Class can be asked.

पाठयक्रम (Syllabus)

I.	**विवेचना और तार्किक योग्यता :-** तार्किक और विश्लेषणात्मक योग्यता: कथन और परिकल्पनाएँ , कथन और तर्क, कथन और निष्कर्ष, कथन और कार्यवाही , संख्या श्रृंखला, अक्षर श्रृंखला, बे- मेल ढूँढना , कोडिंग-डिकोडिंग, संबंध, चित्र और उनके उप-विभाजन से संबंधित समस्याएं आदि।
II.	**प्रमुख सम-सामयिक घटनाएं:** खेल, राजनीतिक, अर्थव्यवस्था, सामाजिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिकी संबंधी एवं तकनीकी क्षेत्र से संबंधी मुद्दे इत्यादि। राज्य एवं राष्ट्रीय मुद्दे प्रसिद्ध व्यक्तित्व राज्य, राष्ट्रीय कार्यक्रम एवं नीति इत्यादि। **सामान्य विज्ञान:** भौतिक एवं रासायनिक परिर्वतन धातु, अधातु एवं प्रमुख यौगिक प्रकाश का परावर्तन एवं नियम आनुवांशिकी से संबंधित सामान्य शब्दावली मानव शरीर: संरचना, अंग तंत्र प्रमुख मानव रोग, कारक एवं निदान, अपशिष्ट प्रबंधन

	आपदा प्रबन्धन एवं जलवायु परिर्वतन: आपदा प्रबन्धन: परिचय, वर्गीकरण(प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाएॅ) आपदा प्रबन्धन और जलवायु परिवर्तन के लिए काम करने वाली राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियो की भूमिका और कार्यात्मक रूपरेखा। आपदा प्रबन्धन रणनीतियाँ और उपाय -आपदा प्रबन्धन और जलवायु परिर्वतन के लिए राष्ट्रीय नीति और योजना। पर्यावरण पर मानवीय प्रभाव वनों की कटाई, प्रदूषण, संसाधनों का अतिदोहन, पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव और जैव विविधता संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण
III.	**भारतीय संविधान एवं राजस्थान राज्य के विशेष सन्दर्भ में राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था:** 1- संविधान का परिचय एवं आधारभूत लक्षण 2- सूचना का अधिकार अधिनियम इत्यादि। 3- राज्य शासन एवं राजनीतिः राज्यपाल, मुख्यमंत्री और मंत्रिमंडल, विधानसभा तथा न्यायपालिका 4- राज्य का प्रशासनिक ढांचाः मुख्य सचिव, जिला प्रशासन (सामान्य प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन),जिला स्तर पर न्यायिक ढांचा
	राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति: ऐतिहासिक घटनाएँ, स्वतंत्रता आन्दोलन, एकीकरण, महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, भाषा एवं साहित्य, संस्कृति एवं सामाजिक जीवन, वेशभूषा, वाद्य यंत्र, लोक देवता, लोक साहित्य, बोलियाँ, मेले और त्यौहार, आभूषण, लोक कलाएं, वास्तुकला, लोक संगीत, नृत्य, रंगमंच, पर्यटन स्थल व स्मारक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान की हस्तियाँ इत्यादि।
	भूगोल: राजस्थान:- स्थिति, विस्तार, भौतिक स्वरूप एवं भौतिक विभाजन, मृदा, प्राकृतिक वनस्पतियां व वन संरक्षण जलवायु जल संसाधन, अपवाह तंत्र व झीलें, प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ, जनसंख्या: आकार, वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगनुपात एवं साक्षरता, राजस्थान का परिवहन व राज्य मार्ग इत्यादि।
	अर्थशास्त्र- राजस्थान: ग्रामीण विकास, राज्य के विकास में उद्योग, कृषि, पशुपालन एवं खनिज क्षेत्र की भूमिका, राज्य की अर्थव्यवस्था- विशेषताऍ और समस्याए, राज्य की आय, बजट की अवधारणा, राज्य की अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौतियाँ इत्यादि।

विषय वस्तु

01 राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजवंश	1 – 34
2.	स्वतन्त्रता आन्दोलन	35 – 49
3.	राजस्थान का एकीकरण	49 – 51
4.	महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व	52 – 56
5.	वास्तुकला एवं स्मारक	57 – 72
6.	मेले एवं त्योहार	73 – 76
7.	लोककलाएँ	76 – 79
8.	लोक देवी-देवता	79 – 85
9.	लोक नृत्य एवं नाट्य	86 – 91
10.	लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र	92 – 99
11.	भाषा एवं साहित्य	100 – 105
12.	वेशभूषा एवं आभूषण	106 – 113
13.	संस्कृति एवं सामाजिक जीवन	113 – 123

02 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	125 – 127
2.	भौतिक स्वरूप एवं विभाजन	128 – 134
3.	जलवायु	135 – 140
4.	अपवाह तंत्र एवं झीलें	140 – 148
5.	सिंचाई परियोजनाएँ	148 – 152
6.	वन एवं वन्यजीव	152 – 157
7.	मृदा	158 – 159
8.	पर्यटन स्थल एवं परिवहन	160 – 165
9.	जनसंख्या	165 – 169

03 भारत का संविधान एवं राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संविधान का परिचय एवं आधारभूत लक्षण	171 – 177
2.	सूचना का अधिकार अधिनियम	178 – 180
3.	राज्यपाल	180 – 184
4.	मुख्यमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद्	184 – 188
5.	विधानसभा	188 – 193
6.	उच्च न्यायालय	193 – 196
7.	मुख्य सचिव	196 – 197
8.	जिला प्रशासन	198 – 204
9.	जिला न्यायिक व्यवस्था	204 – 206

04 राजस्थान की अर्थव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	ग्रामीण विकास	208 – 211
2.	आर्थिक विकास	212 – 230
3.	विकास परियोजनाएँ	231 – 235
4.	कृषि क्षेत्र	235 – 241
5.	पशुपालन	241 – 243
6.	राज्य की अर्थव्यवस्था – विशेषताएँ, समस्याएँ एवं चुनौतियाँ	244 – 245
7.	राज्य की आय	246 – 248
8.	राजस्थान बजट 2024-25	248 – 252

05 आपदा प्रबंधन एवं जलवायु परिवर्तन

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	आपदा प्रबंधन : परिचय व वर्गीकरण	254 – 255
2.	प्रमुख संस्थाएँ व भूमिका	256 – 264
3.	रणनीतियाँ और उपाय	265 – 266
4.	राष्ट्रीय नीति और योजना	266 – 269
5.	पर्यावरण पर मानवीय प्रभाव	269 – 275

06 सामान्य विज्ञान

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	मानव कार्यिकी	277 – 309
2.	मानव रोग एवं उपचार	310 – 315
3.	आनुवंशिकी	316 – 321
4.	अपशिष्ट प्रबंधन	322 – 323
5.	भौतिक व रासायनिक परिवर्तन	324 – 329
6.	धातु, अधातु एवं मिश्र धातु	329 – 332
7.	प्रकाश	333 – 341

07 मानसिक विवेचना एवं तार्किक योग्यता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संख्या और अक्षर शृंखला	343 – 352
2.	कोडिंग-डिकोडिंग	352 – 363
3.	बे-मेल ढूँढना	363 – 366
4.	रक्त सम्बन्ध	366 – 374
5.	जल एवं दर्पण छवियाँ	375 – 379
6.	आकृति की गणना	380 – 385
7.	आकृति वर्गीकरण	386 – 388
8.	आकृति समानता	389 – 393
9.	चित्र शृंखला	394 – 398
10.	आकृति पूरी करना	399 – 403
11.	कथन और निष्कर्ष	404 – 409
12.	कथन और तर्क	410 – 414
13.	कथन और कार्यवाही	414 – 418
14.	कथन और पूर्वधारणाएँ	419 – 421

08 विगत वर्ष के प्रश्न-पत्र

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	विगत वर्ष प्रश्न-पत्र 2017	423 – 428
2.	विगत वर्ष प्रश्न-पत्र 2017	429 – 433

❑❑❑❑

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

1 राजवंश

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश

- राजस्थान के दक्षिण पश्चिम में गुर्जरात्रा प्रदेश में प्रतिहार वंश की स्थापना हुई।
- प्रतिहार शब्द का अर्थ 'द्वारपाल' है, क्योंकि प्रतिहारों ने अरब आक्रमणकारियों से भारत की रक्षा की।
- अतः इनकी तुलना मौर्य व गुप्त राजाओं से भी की जा सकती है।
- प्रतिहार स्वयं को लक्ष्मण के वंशज सूर्यवंशी/रघुवंशी मानते हैं क्योंकि लक्ष्मण राम के प्रतिहार(द्वारपाल) थे, अतः यह वंश प्रतिहार कहलाया।
- गुर्जर-प्रतिहारों का शासन छठी से दसवीं शताब्दी तक जोधपुर के मण्डोर व जालोर के भीनमाल क्षेत्र में रहा था, इन्होंने बाद में उज्जैन व कन्नौज को अपनी शक्ति का केन्द्र बनाया।
- गुर्जर-प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार गुर्जर-प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर-प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं सदी तक रहा था।
- बादामी के चालुक्य नरेश 'पुलकेशिन-द्वितीय' के 'एहोल अभिलेख' में गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम हुआ है।
- चंदेल वंश के शिलालेख में गुर्जर-प्रतिहार शब्द का उल्लेख मिलता है।
- छठी शताब्दी के द्वितीय चरण में उत्तर-पश्चिम भारत में एक नए राजवंश की स्थापना हुई, जो 'गुर्जर-प्रतिहार वंश' कहलाया।
- नीलकुंड, राधनपुर, देवली तथा करडाह शिलालेख में प्रतिहारों को गुर्जर कहा गया है।
- स्कन्द पुराण के पंच द्रविड़ों में गुर्जरों का उल्लेख मिलता है।
- अरब यात्रियों ने इन्हें 'जुर्ज' कहा है। अलमसूदी ने गुर्जर-प्रतिहार को 'अल गुर्जर' और राजा को 'बोरा' कहा है।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को राम का प्रतिहार एवं विशुद्ध क्षत्रिय कहा है।
- मुहणोत नैणसी ने गुर्जर-प्रतिहारों की '26 शाखाओं' का वर्णन किया, जिनमें- मंडोर, जालोर, राजोगढ़, कन्नौज, उज्जैन और भड़ौंच के गुर्जर-प्रतिहार बड़े प्रसिद्ध रहे थे।
- मारवाड़ में छठी शताब्दी ईस्वी में 'हरिश्चन्द्र' (रोहिलद्धि) नामक ब्राह्मण ने मंडोर को अपनी राजधानी बनाकर गुर्जर-प्रतिहार वंश की स्थापना की।
- हरिश्चन्द्र को गुर्जर-प्रतिहारों का 'आदिपुरुष' कहा गया है।
- गुर्जर-प्रतिहारों को भारत का 'द्वारपाल' कहा जाता है।
- गुर्जर-प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था।
- बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर-प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं।

मण्डोर के प्रतिहार

- गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से यह शाखा सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण थी।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डोर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- गुर्जर-प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डोर थी।
- गुर्जर-प्रतिहारों की शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्त्वपूर्ण मण्डोर के प्रतिहार थे। मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते हैं।
- घटियाला शिलालेख में मण्डोर के प्रतिहार वंश की प्रारम्भिक स्थिति व वंशावली मिलती है।

हरिश्चंद्र

- हरिश्चंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक माना जाता है। हरिश्चंद्र को प्रतिहारों का गुरु/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष/ गुर्जर-प्रतिहारों का मूल पुरुष कहते हैं।
- हरिश्चंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी। क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा था ।
- घटियाला शिलालेख के अनुसार हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण की पत्नी भद्रा से चार पुत्र भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दह उत्पन हुए।
- हरिश्चन्द्र के चारों पुत्रों ने माण्डव्यपुर (मण्डोर) को जीता तथा इसके चारों ओर परकोटा बनवाया।
- मण्डोर के प्रतिहार वंश की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से शुरू होती है।

रज्जिल

- रज्जिल ने मंडोर के आस-पास के क्षेत्रों को जीतकर अपने राज्य का विस्तार किया तथा मण्डोर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया।

नरभट्ट

- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नरभट्ट का उल्लेख 'पेल्लोपेल्ली' नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ साहसिक कार्य करने वाला होता है।
- यह रज्जिल का पुत्र था जो रज्जिल का उत्तराधिकारी बना।
- नरभट्ट की रणकुशलता के कारण इनको अभिलेखों में 'पिल्लापल्ली' के नाम (उपाधि) से पुकारा गया है।

नागभट्ट-प्रथम

- यह नरभट्ट का पुत्र व रज्जिल का पौत्र था जो एक प्रतापी शासक था।
- नागभट्ट-प्रथम को नाहड़ के नाम से पुकारा जाता था।
- घटियाला शिलालेख के अनुसार नागभट्ट-प्रथम ने मण्डोर राज्य की पूर्वी सीमा का विस्तार कर अपनी राजधानी 'मेड़ान्तक (मेड़ता)' को बनाई।
- ग्वालियर प्रशस्ति में इसे 'नारायण' और 'मलेच्छों का नाशक' भी कहा गया है।

यशोवर्धन
- यह नागभट्ट-प्रथम के पुत्र तात का पुत्र था।
- राजोली ताम्रपत्र के अनुसार इसके समय पृथुवर्धन ने गुर्जर-प्रतिहार राज्य पर आक्रमण किया था लेकिन असफल रहा था।

शिलूक
- यह गुर्जर-प्रतिहार राजा यशोवर्धन के पुत्र चन्दुक का पुत्र था।
- घटियाला शिलालेख के अनुसार शिलूक ने देवराज भाटी से युद्ध किया तथा देवराज भाटी को मारकर उनके राज्य चिह्न व छत्र को छीन लिया था।

कक्क
- कक्क ने मुदागिरी (मुंगेर, बिहार) में गौड़ राजा धर्मपाल को पराजित किया था।
- कक्क की पत्नी पद्मिनी से उत्पन पुत्र बाउक था तथा कक्क की दूसरी पत्नी दुर्लभदेवी से उत्पन पुत्र कक्कुक था।

बाउक
- कक्क की मृत्यु के पश्चात् इनका उत्तराधिकारी बाउक हुआ था।
- बाउक ने मयूर नामक राजा के आक्रमण को विफल किया तथा इस विजय के उपलक्ष्य में मण्डोर शिलालेख उत्कीर्ण करवाया था।

कक्कुक
- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक राजा बना।
- इनके समय घटियाला के दो शिलालेख उत्कीर्ण हुए थे।
- इसने आभीरों का आक्रमण विफल कर इसकी विजय के उपलक्ष्य में रोहिंसकूप व मण्डोर में विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया था।
- घटियाला के शिलालेखों में कक्कुक को मरु, वल्ल, गुर्जरात्रा, मांड (जैसलमेर), अज्ज (मध्य प्रदेश) व तृवणी आदि राज्यों में ख्याती फैलाने वाला राजा कहा गया है।
- कुक्कुक ने वट्टनानक (बेड़ा-नाणा) नामक नगर बसाया था।
- मण्डोर की इन्दा प्रतिहार शाखा ने हम्मीर परिहार से परेशान होकर चूंडा राठौड़ को 1395 ई. में मण्डोर दहेज में दे दिया था।
- इस घटना के बाद मण्डोर में प्रतिहार राजवंश का विस्तार समाप्त हो गया था।

जालोर, कन्नौज व उज्जैन के गुर्जर प्रतिहार वंश

- नागभट्ट-प्रथम से जालोर प्रतिहार वंश का आरम्भ होता है।
- यहाँ के गुर्जर प्रतिहार रघुवंशी प्रतिहार कहलाते हैं।
- इस प्रतिहार वंश का उद्भव भी मण्डोर प्रतिहार शाखा से माना जाता है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग अपने यात्रा वृत्तांत सी-यू-की में कु-चे-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है, जिसकी राजधानी पि-लो-मो-लो (भीनमाल) में थी ।

भीनमाल (जालोर) शाखा
- रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया। भीनमाल शाखा के प्रतिहारों के उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है, जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई।
- प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है।

नागभट्ट-प्रथम (730-760 ई.)
- नागभट्ट-प्रथम को नागावलोक भी कहा जाता था।
- नागभट्ट-प्रथम ने अरब सेना को सिन्धु नदी के पश्चिम की ओर खदेड़ा था तथा अरबों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में इनको 'नारायण का अवतार' कहा गया था।
- इनके समय इनका राज्य उत्तर में मारवाड़ से दक्षिण में भड़ौंच तक फैला था जिसमें लाट, जालोर, आबू व मालवा के कुछ भाग शामिल थे।
- इसे भीनमाल के गुर्जर-प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- नागभट्ट-प्रथम को ग्वालियर प्रशस्ति में 'नारायण' नाम से पुकारा गया है।
- नागभट्ट-प्रथम ने 'राम का द्वारपाल', 'मेघनाद के युद्ध का अवरोधक', 'इन्द्र के गर्व का नाशक' व 'नारायण की मूर्ति का प्रतीक' उपाधियाँ धारण की।
- नागभट्ट-प्रथम के समय मण्डोर के प्रतिहार इनके सामन्तों के रूप में शासन करते थे।
- नागभट्ट-प्रथम का दरबार 'नागावलोक का दरबार' कहलाता था।
- जालोर, अवन्ति, कन्नौज प्रतिहारों की नामावली नागभट्ट से प्रारंभ होती है।
- नागभट्ट-प्रथम के प्रमुख सामन्त गुहिल (बप्पा रावल – शक्तिशाली), चौहान, राठौड़, कलचूरि, चंदेल, चालुक्य, परमार थे।
- ग्वालियर प्रशस्ति में नागभट्ट-प्रथम को 'मलेच्छों का नाशक' तथा 'नारायण' कहा गया है।
- इनके शासलकाल में चीनी यात्री 'ह्वेनसांग' ने कुल 72 देशों की यात्रा की थी। उसने भीनमाल को 'पिलोमोलो/भीलामाला' तथा गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो' कहा।

वत्सराज (783-795 ई.)
- इन्होंने 'रणहस्तिन' की उपाधि धारण की थी।
- इसे गुर्जर-प्रतिहार वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- वत्सराज के शासन काल में 778 ई. में 'उद्योतन सूरी' ने जालोर में 'कुवलयमाला' प्राकृत भाषा में और 783 ई. 'आचार्य जिनसेन सूरी' ने 'हरिवंश पुराण' ग्रन्थ की रचना की।
- ओसियां के जैन मंदिर प्रतिहार शासक वत्सराज के समय निर्मित हैं।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था।
- वत्सराज ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की, जो 150 वर्ष तक चला।

नागभट्ट-द्वितीय (795-833 ई.)
- नागभट्ट-द्वितीय के कन्नौज विजय का वर्णन 'ग्वालियर अभिलेख' में मिलता है।
- ग्वालियर प्रशस्ति में इनको आन्ध्र, आनर्त, मालव, किरात, तुरूष्क, वत्स, मत्स्य आदि प्रदेशों का विजेता बताया गया है।
- इनके समय प्रतिहारों ने कन्नौज में शासन कार्य शुरू किया था।
- नागभट्ट-द्वितीय की माता का नाम 'सुंदरदेवी' था।
- वत्सराज की मृत्यु के बाद यह गुर्जर-प्रतिहारों का शासक बना।

- इन्होंने उज्जैन और कन्नौज को जीत लिया और कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई।
- मान्यखेत के राष्ट्रकूट शासक गोविन्द-तृतीय ने नागभट्ट-द्वितीय को हराकर कन्नौज पर अधिकार कर लिया।
- गोविन्द-तृतीय के साम्राज्य विस्तार के बारे में इतिहासकारों ने लिखा है कि – "गोविन्द-तृतीय के घोड़े हिमालय से कन्याकुमारी तक बिना किसी शत्रु क्षेत्र में प्रवेश किए सीधे दौड़ सकते थे।"
- इनका दरबार भी "नागावलोक का दरबार" कहलाता था।
- मुसलमानों के विरुद्ध नागभट्ट-द्वितीय के संघर्ष का प्रमाण 'खुम्माण रासो' नामक ग्रन्थ से मिलता है।
- नागभट्ट-द्वितीय ने कन्नौज के आयुध वंश तथा बंगाल के पाल वंश को पराजित किया था, इसलिए इनको बुचकला अभिलेख में 'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर' कहा गया था।

मिहिरभोज (836-885 ई.)

- मिहिरभोज का शाब्दिक अर्थ 'सूर्य का प्रतीक' है।
- मिहिरभोज वैष्णव धर्म का अनुयायी था ।
- इनका सर्वप्रथम अभिलेख 'वराह अभिलेख' है जिसकी तिथि 893 विक्रम संवत् (836 ई.) है।
- नागभट्ट-द्वितीय का उत्तराधिकारी भोज हुआ जो इतिहास में मिहिरभोज के नाम से विख्यात है।
- इनकी माता का नाम 'अप्पा देवी' था।
- मिहिरभोज वैष्णव धर्म का अनुयायी था ।
- इनका सर्वप्रथम अभिलेख 'वराह अभिलेख' है जिसकी तिथि 893 विक्रम संवत् (836 ई.) है।
- मिहिरभोज को बंगाल के शासक धर्मपाल के पुत्र देवपाल ने पराजित किया।
- मिहिरभोज ने क्रमश: नारायणपाल व विग्रहपाल को बारी-बारी से हराया था।
- 851 ई. में अरब यात्री 'सुलेमान' ने भारत की यात्रा की थी।
- सुलेमान ने बताया कि मिहिरभोज मुसलमानों का सबसे बड़ा शत्रु था।
- कश्मीरी कवि 'कल्हण' ने अपने ग्रन्थ 'राजतंरगिणी' में मिहिरभोज के साम्राज्य का उल्लेख किया।
- मिहिरभोज द्वारा रचित ग्रन्थ 'शृंगार प्रकाश', 'युक्ति', 'कल्पतरु', 'राज मृगांक' हैं।
- ग्वालियर अभिलेख के अनुसार मिहिरभोज ने 'आदिवराह' तथा दौलतपुर अभिलेख के अनुसार 'प्रभास' की उपाधि धारण की।
- इनके चाँदी व ताँबे के सिक्कों पर इनकी 'आदिवराह' की उपाधि मिलती है।
- मिहिरभोज को दौलतपुर अभिलेख में प्रभास कहा गया है।
- स्कन्ध पुराण के अनुसार मिहिरभोज ने तीर्थ यात्रा करने के लिए अपने पुत्र महेन्द्रपाल को सिंहासन सौंपकर राजपाठ त्याग दिया था।

महेंद्रपाल-प्रथम (885-910 ई.)

- इनकी माता का नाम 'चन्द्रा भट्टारिका देवी' था।
- महेंद्रपाल का गुरु व दरबारी कवि राजशेखर था।
- इनके दरबारी राजकवि 'राजशेखर' ने इनको विद्धशालभंजिका ग्रन्थ में 'निर्भय नरेंद्र', 'निर्भयराज', 'रघुकुल तिलक' व 'रघुकुल चूड़ामणि' की उपाधियाँ दी।
- राजशेखर ने 'कर्पूरमंजरी', 'काव्यमीमांसा', 'विद्धशालभंजिका, 'बालभारत', 'प्रबंधकोष', 'बालरामायण', 'हरविलास' और 'भुवनकोष' आदि ग्रन्थों की रचना की।
- महेन्द्रपाल का शासन काठियावाड़ तक विस्तृत था।

महिपाल-प्रथम (914-943 ई.)

- राजशेखर ने इन्हें 'आर्यावर्त का महाराजाधिराज', 'रघुकुलमुक्तामणि' व 'रघुवंश-मुकुटमणि' की उपाधियाँ दी।
- राजशेखर का ग्रन्थ – 'प्रचंडपाण्डव' में महिपाल की विजयों का वर्णन मिलता है।
- इनके समय 915 ई. में अरब यात्री 'अल मसूदी' ने भारत की यात्रा की थी।
- अरब यात्री 'अल मसूदी' के अनुसार इसने उत्तर-पश्चिम में पंजाब के 'कुलूतों' और 'रनठों' को पराजित किया था।
- 'हड्डल अभिलेख' से प्रकट होता है कि उसका सामंत 'धरणिवराह' उसकी अधीनता में सौराष्ट्र पर शासन पर कर रहा था।
- महिपाल-प्रथम ने चन्देल शासक हर्ष की सहायता से पुन: उज्जैन पर अधिकार कर लिया था।

महेन्द्रपाल-द्वितीय

- महेन्द्रपाल-द्वितीय की माता का नाम प्रसाधना देवी था।
- महेन्द्रपाल-द्वितीय, महेन्द्रपाल-प्रथम का उत्तराधिकारी बना।
- महेन्द्रपाल-द्वितीय के पश्चात् प्रतिहार वंश के चार शासक हुए- देवपाल, विनायकपाल-द्वितीय, महिपाल-द्वितीय व विजयपाल।

महिपाल-द्वितीय

- महिपाल-द्वितीय का उल्लेख बयाना अभिलेख में मिलता है।
- बयाना अभिलेख में महिपाल-द्वितीय को 'महाराजाधिराज महिपाल देव' कहा गया है।

विजयपाल

- विजयपाल को राजौर अभिलेख में क्षितिपाल देव का पुत्र बताया गया है।

राज्यपाल (990-1019 ई.)

- विजयपाल का उत्तराधिकारी राज्यपाल हुआ था।
- इनके समय कन्नौज भारत का एक सुन्दर व समृद्ध शहर था, जहाँ पर 10,000 सुंदर मन्दिर थे।
- राज्यपाल ने कन्नौज की रक्षा हेतु कन्नौज के चारों ओर 7 किले बनवाए थे।
- जब 1018 ई. में गजनी के सुल्तान महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया, तब राज्यपाल भागकर जंगलों में चला गया था, इस कारण बुंदेलखंड के शासक 'विद्याधर चंदेल' ने राज्यपाल को कायर कहना प्रारंभ कर दिया था।
- इनके समय प्रतिहार वंश का शासन पुन: राजस्थान तक सिमट गया था।
- विद्याधर चंदेल ने राज्यपाल पर आक्रमण किया। इस दौरान राज्यपाल वीरगति को प्राप्त हुआ।

त्रिलोचनपाल (1019-1027 ई.)

- राज्यपाल का उत्तराधिकारी राज्यपाल का पुत्र त्रिलोचनपाल हुआ था।
- अलबरुनी के अनुसार इनकी राजधानी 'बारी' थी, जो रामगंगा और सरयू के संगम के निकट थी।
- इनके समय 1020 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया और लूट-मार करके वापस गजनी चला गया।

यशपाल (1027-1036 ई.)

- यह गुर्जर-प्रतिहारों का अंतिम शासक था।
- कड़ा शिलालेख में यशपाल व उनके दान का वर्णन मिलता है।
- इसके बाद गुर्जर-प्रतिहारों ने सामंतों के रूप में कुछ समय तक कन्नौज पर शासन किया। तत्पश्चात् 'गहड़वाल वंश' ने भी कुछ समय तक (1994 ई.) कन्नौज पर शासन किया था।

अवन्ति/उज्जैन शाखा

- नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित।

कन्नौज शाखा

- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया।

चौहान राजवंश

- चौहान शब्द संस्कृत शब्द चाहमान का स्थानीय रूप है।
- हम्मीर महाकाव्य के अनुसार चौहानों का प्रारम्भिक शासन पुष्कर के आस-पास था।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार चौहानों का प्रारम्भिक शासन सांभर के आस-पास क्षेत्र था जिसे शाकम्भरी या सपादलक्ष कहते थे, जिसकी राजधानी अहिच्छत्रपुर थी।

चौहानों की उत्पत्ति :-

- 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चन्दबरदाई तथा मुहणोत नैणसी एवं सूर्यमल्ल मीसण के अनुसार अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुए हैं।
- नयनचंद्र सूरी के 'हम्मीर महाकाव्य' और जयानक के 'पृथ्वीराज विजय' के अनुसार चौहान 'सूर्यवंशी' थे।
- पंडित गौरीशंकर ओझा भी इस मत का समर्थन करते हैं।
- कर्नल टॉड और विलियम क्रुक ने चौहानों को विदेशी जाति का बताया है।
- बिजौलिया शिलालेख के आधार पर डॉ. दशरथ शर्मा का मानना है कि चौहानों के प्रारंभिक पूर्वज ऋषि वत्स के वंशज होने से 'वत्सगौत्रीय ब्राह्मण' है।
- 'क्याम खाँ रासो' के रचयिता जान-कवि ने इन्हें ब्राह्मण वंशीय बताया है।

शासन क्षेत्र

- चौहान जांगल देश (जो वर्तमान बीकानेर, जयपुर और उत्तरी मारवाड़ का क्षेत्र) के रहने वाले थे।
- चौहानों का प्रमुख राज्य सपादलक्ष (सांभर) था तथा इनकी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) थी।

प्रमुख शाखाएँ

- सांभर के चौहानों की प्रमुख शाखाएँ- शाकम्भरी के चौहान, रणथम्भौर के चौहान, नाडोल के चौहान, जाबालिपुर के चौहान, सप्तपुर के चौहान, लाट के चौहान, धवलपुरी के चौहान, प्रतापगढ़ के चौहान।

शाकम्भरी के चौहान

- बिजौलिया शिलालेख व राजशेखर के प्रबंधकोष में चौहानों का संस्थापक वासुदेव चौहान व मूल स्थान सांभर या सपालदक्ष था।

वासुदेव चौहान

- बिजौलिया शिलालेख, 'सुर्जन चरित्र' और 'अर्ली चौहान डायनेस्टी' आदि साक्ष्यों के अनुसार शाकम्भरी के चौहान वंश का आदिपुरुष वासुदेव था जिसने 551 ई. के आस-पास राज्य स्थापित किया।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार सांभर झील का निर्माण वासुदेव ने करवाया था।
- वासुदेव ने सर्वप्रथम अपनी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) को बनाई।

प्रमुख तथ्य :-

- अजयपाल ने सातवीं शताब्दी में सांभर नगर की स्थापना की थी।
- सिंहराज के भाई लक्ष्मण नाडोल में चौहान वंश की शाखा स्थापित की थी।
- सिंहराज का उत्तराधिकारी विग्रहराज-द्वितीय हुआ।

विग्रहराज-द्वितीय

- 973 ई. के हर्षनाथ के अभिलेख से विग्रहराज के शासन काल के बारे में जानकारी मिलती है।
- हर्षनाथ लेख में विग्रहराज-द्वितीय की विजयों का उल्लेख मिलता है।
- हर्षनाथ लेख के अनुसार यह प्रारंभिक चौहानों का सबसे प्रतापी शासक था।
- विग्रहराज-द्वितीय ने चालुक्य शासक मूलराज-प्रथम को पराजित किया तथा भड़ौंच में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता मंदिर का निर्माण करवाया था।
- पृथ्वीराज विजय नामक ग्रंथ के अनुसार गोविन्द-तृतीय की उपाधि वैरीघट्ट (शत्रुसंहारक) थी।
- फरिस्ता के अनुसार गोविन्द-तृतीय ने गजनी के शासक का मारवाड़ आक्रमण असफल किया था।

अजयराज (1105-1133 ई.)

- यह पृथ्वीराज-प्रथम का पुत्र था।
- अजयराज शैव धर्म का समर्थक था।
- इन्होंने 1113 ई. में अजयमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की।
- इन्होंने 'अजयप्रिय द्रम्म' नाम से चाँदी व ताँबे के सिक्के चलाए थे, इनकी कुछ मुद्राओं पर इनकी पत्नी सोमलेखा (सोमलवती) का नाम भी अंकित मिलता है।
- अजयराज ने मालवा के परमार शासक नरवर्मन व अन्हिलपाटन के चालुक्य शासक मूलराज द्वितीय को पराजित किया था।

अर्णोराज (आनाजी) (1133-1155 ई.)

- इन्होंने 'महाराजाधिराज', 'परमभट्टारक', 'परमेश्वर' की उपाधि धारण की।
- इन्होंने अजमेर में आनासागर झील का निर्माण करवाया था।
- अर्णोराज शैव धर्म का अनुयायी था।

- इन्होंने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया था।
- इनके समय में 'देवबोध' और 'धर्मघोष' प्रकाण्ड विद्वान थे, जिनको उन्होंने सम्मानित किया था।
- अर्णोराज की हत्या 1155 ई. में इनके पुत्र जगदेव ने की थी।

विग्रहराज-चतुर्थ/बीसलदेव चौहान (1158-1163 ई.)

- इनके काल को चौहानों का 'स्वर्णयुग' माना जाता है।
- इन्होंने गजनी के शासन खुशरुशाह व दिल्ली के तोमर शासक तँवर को हराकर और दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया।
- विग्रहराज-चतुर्थ दिल्ली पर अधिकार करने वाला प्रथम चौहान शासक था।
- इन्होंने संस्कृत भाषा में 'हरिकेली' नामक नाटक की रचना की थी।
- जयानक भट्ट ने विग्रहराज को 'कवि बान्धव' (कवि बंधु) की उपाधि प्रदान की।
- सोमदेव, बीसलदेव का दरबारी कवि था जिसने 'ललित विग्रहराज' नाटक की संस्कृत भाषा में रचना की।
- इन्होंने बीसलपुर नामक नगर (वर्तमान टोंक में) एवं बीसलपुर बाँध का निर्माण करवाया।
- इन्होंने अजमेर में 'संस्कृत विद्यालय (सरस्वती कंठाभरण)' की स्थापना की जिसे बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक ने तोड़कर 'अढाई दिन का झोंपड़ा/मस्जिद' बनवाई। इसकी जानकारी अढाई दिन के झोंपड़े की सीढ़ियों में मिले 'दो पाषाण' अभिलेखों में मिलती है।

अढाई दिन का झोपड़ा

- विग्रहराज चतुर्थ ने अजमेर में कण्ठाभरण नामक संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया जिसे शिहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक (लाखबक्श) ने तुड़वाकर यहाँ मस्जिद का निर्माण करवाया तथा यहां फारसी अभिलेख लिखवाए राजस्थान में प्रथमत: फारसी अभिलेख यहीं मिलते हैं। इसे अढाई /ढाई दिन का झोपड़ा कहते हैं।
- अबु बकर ने अढाई दिन की इस मस्जिद का डिजाइन तैयार किया था।
- कर्नल जेम्स टॉड ने अढाई दिन के झोपड़े के लिए कहा है कि "मैंने राजस्थान में इतनी प्राचीन व सुरक्षित इमारत नहीं देखी"।
- यह राजस्थान की पहली मस्जिद हैं, इसे 16 खंभों का महल भी कहते हैं।

सोमेश्वर

- अर्णोराज व कांचन देवी का पुत्र सोमेश्वर चौहान, पृथ्वीराज द्वितीय की निसंतान मृत्यु होने पर शाकंभरी का शासक बना।
- सोमेश्वर चौहान शासक बनने से पूर्व गुजरात के जयसोम व कुमारपाल का दरबारी था।
- सोमेश्वर चौहान ने आबू के जैतसिंह की सहायता हेतु युद्ध में भाग लिया और गुजरात के चालुक्यवंशी शासक भीम द्वितीय ने सोमेश्वर की हत्या कर दी।
- दिल्ली के राजा और पृथ्वीराज चौहान के नाना महाराजा अनंगपाल द्वितीय थे जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान को दिल्ली का प्रशासन सौंप दिया था।

पृथ्वीराज-तृतीय/पृथ्वीराज चौहान (1177-1192 ई.)

- पृथ्वीराज-तृतीय का जन्म 1166 ई. में गुजरात की राजधानी 'अन्हिलपाटन' में हुआ।
- अजमेर के चौहान वंश का यह अंतिम प्रतापी शासक था।
- इनके पिता का नाम सोमेश्वर व माता का नाम कर्पूरी देवी (कलचूरि वंश की राजकुमारी) था।
- पृथ्वीराज-तृतीय ने 'रायपिथौरा', 'दलपुंगल' (विश्व विजेता) की उपाधियाँ धारण की थी।
- पृथ्वीराज-तृतीय के प्रधानमंत्री 'कदम्बवास' और सेनाध्यक्ष 'भुवनैकमल्ल' थे।
- 'तुमुल के युद्ध' (1182 ई.) में पृथ्वीराज ने मुहाबा के चंदेल शासक
- 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार 1184 ई. में पृथ्वीराज-तृतीय तथा चालुक्य नरेश भीमदेव-द्वितीय दोनों के मध्य आबू के परमार शासक सलख की पुत्री इच्छिनी से विवाह को लेकर विवाद हुआ था।
- कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल के साथ इनके कटुतापूर्ण संबंध थे।
- जयचंद की पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर पृथ्वीराज अजमेर ले आया और उससे विवाह किया था।
- गौरी के आक्रमण के समय चालुक्यों को सहायता देने के विरुद्ध पृथ्वीराज तृतीय को परामर्श देने वाला मंत्री कदम्बवास था।

तराईन के युद्धों के प्रारंभिक स्रोत

- चंदबरदाई - पृथ्वीराज रासो
- हसन निजामी - ताज-उल-मासिर
- मिनहाज-उस-सिराज - तबकात-ए-नासिरी

तराईन का प्रथम युद्ध / तारावड़ी (करनाल, हरियाणा 1191 ई.)

- यह युद्ध पृथ्वीराज-तृतीय और मुहम्मद गौरी (शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी) के मध्य हुआ, जिसमें पृथ्वीराज-तृतीय ने मुहम्मद गौरी को पराजित किया था।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज का सेनापति 'चामुण्डराय' था।

तराईन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

- हसन निजामी के अनुसार सुल्तान जब लाहौर पहुँचा तो उसने एक दूत किवान-उल-मुल्क को पृथ्वीराज के पास भेजा कि पृथ्वीराज उसकी अधीनता स्वीकार कर लें। प्रत्युत्तर में पृथ्वीराज ने उसे गज़नी लौटने की सलाह दी।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज व इनके सेनापति 'गोविन्दराज तोमर' और 'समरसिंह' लड़े थे।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय हुई थी।
- मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज-तृतीय को सिरसा के पास बंदी बना लिया और अपने साथ गजनी ले गया।
- पृथ्वीराज-तृतीय के दरबारी विद्वान – पृथ्वीराज रासो के लेखक चन्दबरदाई (पृथ्वी भट्ट), पृथ्वीराज विजय के लेखक जयानक तथा वागीश्वर, जनार्दन आशाधर, विद्यापति गौड़, विश्वरूप आदि थे।
- 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चन्दबरदाई थे। इस ग्रंथ को चन्दबरदाई के पुत्र 'जल्हण' ने पूरा किया।

अन्य तथ्य

- तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद पृथ्वीराज चौहान का पुत्र गोविन्दराज अजमेर का शासक बना और उसने मुहम्मद गौरी की अधीनता स्वीकार की।
- गोविन्दराज के चाचा हरिराज ने विद्रोह करके अजमेर पर अधिकार कर लिया था।
- इस समय मुहम्मद गौरी का सेनापति गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक था।

रणथम्भौर के चौहान

- रणथम्भौर के चौहान वंश का संस्थापक पृथ्वीराज का पुत्र गोविन्दराज था।
- इसने कुतुबुद्दीन ऐबक की सहायता से रणथम्भौर में चौहान वंश की स्थापना की थी।
- वीरनारायण के समय रणथम्भौर पर इल्तुतमिश ने आक्रमण किया था जिसको वीरनारायण ने विफल कर दिया था।

हम्मीर देव चौहान (1282-1301 ई.)

- रणथम्भौर की चौहान शाखा का सबसे प्रतापी शासक हम्मीर देव चौहान था जिसे 'हम्मीर हठ' के नाम से जाना जाता है।
- हम्मीर देव के गुरु 'राघव देव' थे।
- हम्मीर देव के दरबार में 'बीजादित्य' नामक विद्वान था।
  हम्मीर के बारे में प्रसिद्ध दोहा –
  "सिंह सवन, सत्पुरुष वचन, कदली फलत इकबार, तिरिया-तेल हम्मीर-हठ चढ़े न दूजी बार"
- इनके समय 1291 ई. में जलालुद्दीन खिलजी ने झाईन के दुर्ग पर आक्रमण किया और इस दुर्ग को बचाने के लिए गुरुदास सैनी ने चौहान सेना का नेतृत्व किया था, इस आक्रमण का वर्णन 'मिफता-उल-फुतुह' में मिलता है।
- इनके समय जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर दुर्ग को जीतने के लिए आक्रमण किया परंतु, उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई इसलिए खिलजी ने कहा– 'मैं रणथम्भौर जैसे 10 दुर्गों को मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता हूँ।'
- हम्मीर देव चौहान ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही मंगोल सेनानायक मुहम्मदशाह को शरण दी थी।
- हम्मीर देव ने अपने दो सेनापति भीमसिंह और धर्मसिंह को इनके विरुद्ध भेजा जिन्होंने अलाउद्दीन खिलजी के अभियान को असफल कर दिया, लेकिन हम्मीर की लौटती सेना पर अलाउद्दीन की सेना ने आक्रमण कर दिया, जहाँ भीमसिंह वीरगति को प्राप्त हो गए थे।
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापति उलुग खाँ और नुसरत खाँ को रणथम्भौर दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए भेजा जिसमें नुसरत खाँ मारा गया था।
- 1301 ई. में अलाउद्दीन खिलजी स्वयं सेना लेकर रणथम्भौर पर आक्रमण करने के लिए आया था।
- अलाउद्दीन खिलजी को इस आक्रमण में सफलता नहीं मिलने के कारण अलाउद्दीन खिलजी ने छल-कपट का सहारा लिया जिसके तहत हम्मीर के सेनापति रतिपाल व रणमल और अधिकारी सुर्जनशाह को दुर्ग का लालच देकर अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी ओर मिला लिया था।
- 1301 ई. में रणथम्भौर के युद्ध में राजपूतों ने हम्मीर के नेतृत्व में केसरिया धारण किया और रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुए।
- हम्मीर की रानी 'रंगदेवी' के नेतृत्व में वीरांगनाओं ने जौहर किया, जो राजस्थान का प्रथम साका (जौहर-केसरिया) कहलाया।
- रानी रंगदेवी की पुत्री 'देवल देवी' ने पद्मला तालाब में कूदकर जल जौहर किया, जो राजस्थान का प्रथम 'जल जौहर' था।
- इस युद्ध में अलाउद्दीन खिलजी की विजय हुई।
- इस युद्ध का आँखों देखा वर्णन 'अमीर खुसरो' ने अपने ग्रंथ 'खजाइन-उल-फुतुह' में किया और अमीर खुसरो ने लिखा कि 'कुफ्र का घर आज इस्लाम का घर हो गया'।
- हम्मीर देव ने 17 युद्ध किए, जिसमें से 16 युद्ध में विजयी रहे और अंतिम युद्ध लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- हम्मीर देव ने अपने पिता जयसिंह के 32 वर्षों के शासन की याद में रणथम्भौर दुर्ग में 32 खंभों की छतरी बनाई जिसे 'न्याय की छतरी' भी कहते हैं।
- हम्मीर की मृत्यु के पश्चात् चौहानों की रणथम्भौर शाखा समाप्त हो गई थी।

नाडोल के चौहान

- नाडोल के चौहान वंश की शाखा का संस्थापक शाकम्भरी के चौहान शासक वाक्पतिराज का पुत्र लक्ष्मण चौहान था।
- लक्ष्मण चौहान ने 981 ई. में नाडोल में आशापुरा देवी के मन्दिर का निर्माण करवाया।
- लक्ष्मण चौहान की मृत्यु के बाद इनके पुत्र शोभित (सोही) ने भीनमाल के शासक मान-परमार को पराजित कर भीनमाल पर अपना राज्य स्थापित किया।
- किराडू अभिलेख के अनुसार परवर्ती समय में नाडोल की चौहान शाखा का शासक अल्हणदेव बना था।
- नाडोल के चौहान शासक अल्हणदेव के छोटे पुत्र कीर्तिपाल (कीतू/कीरत) ने बाहरवीं सदी में जालोर में चौहान वंश की नींव डाली।

जालोर के चौहान

- जालोर का प्राचीन नाम 'जाबालिपुर' था तथा यहाँ के किले को 'सुवर्णगिरी' कहते थे।
- यहाँ के शासक सोनगरा चौहान कहलाए।
- जालोर में चौहान वंश की स्थापना 1181 ई. में कीर्तिपाल (कीतू) ने की थी।
- कीर्तिपाल नाडोल की चौहान शाखा के शासक अल्हण का पुत्र था ।
- कीर्तिपाल का समकालीन मेवाड़ का शासक सामंत सिंह था।
- कीर्तिपाल चौहान ने सोनगढ़ पहाड़ी पर सुवर्णगिरि दुर्ग का निर्माण करवाया।
- जालोर का किला सुकडी नदी के किनारे बना है।

समरसिंह

- कीर्तिपाल की मृत्यु के पश्चात् समरसिंह जालोर का शासक बना। इस समय दिल्ली में मुहम्मद गौरी का नियंत्रण था।
- समरसिंह ने गुजरात के शासक भीमदेव-द्वितीय से अपनी पुत्री लीला देवी का विवाह किया था।

उदयसिंह (1205-1257 ई.)

- उदयसिंह सोनगरा के समय 1228 ई. में दिल्ली सुल्तान इल्तुतमिश ने जालोर पर आक्रमण किया और उदयसिंह ने इस आक्रमण को असफल किया।
- कान्हड़दे प्रबंध के अनुसार 1254 ई. में नसीरुद्दीन महमूद ने उदयसिंह पर आक्रमण परंतु, मुस्लिम सेना को परास्त होकर वापस लौटना पड़ा।

चाचिगदेव (1257-1282 ई.)

- उदयसिंह का उत्तराधिकारी चाचिगदेव हुआ था।
- चाचिगदेव ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।
- इनके समय दिल्ली का सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद व बलबन था।
- चाचिगदेव का उत्तराधिकारी सामन्तसिंह (1282-1305 ई.) हुआ।
- सामन्तसिंह का उत्तराधिकारी कान्हड़देव हुआ।

कान्हड़देव (1305-1311 ई.)

- कान्हड़देव जालोर के चौहान शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था।
- **कान्हड़दे के बारे में जानकारी के स्त्रोत निम्नलिखित है -**
  पद्मनाभ - कान्हड़दे-प्रबन्ध
  वीरमदे सोनगरा री बात
  नैणसी - नैणसी री ख्यात
  फ़रिश्ता - तारीख-ए-फरिश्ता
  मकराना शिलालेख
  अमीर खुसरो - खजाइन-उल-फुतुह
  जालोर प्रशस्ति

कान्हड़दे प्रबंध के अनुसार –

- अलाउद्दीन खिलजी की सेना का गुजरात आक्रमण के समय कान्हड़देव ने रास्ता रोक दिया था इसलिए कान्हड़देव व अलाउद्दीन खिलजी के मध्य संघर्ष प्रारम्भ हो गया।

फरिश्ता के अनुसार –

- अलाउद्दीन ने कान्हड़दे को दिल्ली बुलाकर अपमानित किया।
- 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सेनापति ऐन-उल-मुल्क मुल्तानी को जालोर पर आक्रमण करने के लिए भेजा।
- ऐन-उल-मुल्क मुल्तानी ने कान्हड़देव के साथ समझौता कर कान्हड़देव को अलाउद्दीन खिलजी के दरबार (दिल्ली) ले गया।
- तारीख-ए-फरिश्ता ग्रंथ के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी ने कान्हड़देव को हिन्दू शासकों की शक्ति को चुनौती दी थी जिसको कान्हड़देव सहन न कर सका और जालोर लौट कर युद्ध की तैयारियाँ शुरू की थी।
- नैणसी के अनुसार कान्हड़देव के पुत्र वीरमदेव ने अलाउद्दीन खिलजी की पुत्री फिरोजा से विवाह करने से इन्कार कर दिया था इसलिए अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था।

सिवाणा दुर्ग पर अलाउद्दीन का आक्रमण :-

- अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने कमालुद्दीन गुर्ग के नेतृत्व में 1308 ई. में जालोर की कुंजी सिवाना दुर्ग पर आक्रमण किया तथा इस पर अधिकार किया।
- सिवाना दुर्ग को जीतकर इसका नाम खैराबाद रखा तथा यहाँ का प्रतिनिधि कमालुद्दीन गुर्ग को नियुक्त किया।

अलाउद्दीन खिलजी का जालोर दुर्ग पर आक्रमण :-

- अलाउद्दीन खिलजी ने 1311 ई. में जालोर दुर्ग का घेरा डाला लेकिन सफलता नहीं मिली। अंत में अलाउद्दीन खिलजी ने कान्हड़देव के सेनापति बीका दहिया के सहयोग से जालोर दुर्ग पर अधिकार किया।
- फरिश्ता के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी का जालोर पर द्वितीय आक्रमण 1311 ई. में हुआ।
- कान्हड़देव व इनके पुत्र वीरमदेव इस युद्ध में लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए तथा किले में महिलाओं ने जौहर किया।
- अलाउद्दीन ने जालोर दुर्ग को जीतकर इसका नाम जलालाबाद रखा।
- इस युद्ध की जानकारी पद्मनाथ के ग्रंथ 'कान्हड़दे' तथा 'वीरमदेव सोनगरा री बात' में मिलती है।
- हसन निजामी ने जालोर दुर्ग के विषय में कहा है कि 'यह ऐसा किला है जिसका दरवाजा कोई आक्रमणकारी नहीं खोल सका' ।
- जालोर के सोनगरा चौहानों की कुलदेवी आशापुरी माता (महोदरी माता) है।

सिरोही के चौहान

- कर्नल टॉड के अनुसार सिरोही नगर का मूल नाम 'शिवपुरी' था।
- प्राचीन साहित्य में सिरोही को अर्बुद प्रदेश कहा गया है।
- सिरोही के चौहान वंश का संस्थापक राव लूम्बा था, जो जालोर की देवड़ा शाखा से सम्बन्धित था, इसलिए सिरोही के चौहानों को देवड़ा चौहान कहा गया है।
- लुम्बा देवड़ा ने चंद्रावती व आबू पर 1311 ई. में परमारों को हराकर सिरोही में चौहान वंश की स्थापना की।
- सिरोही के देवड़ाओं का आदिपुरुष लुम्बा देवड़ा था, जिसकी राजधानी चंद्रावती थी।
- 1425 ई. में सहसमल देवड़ा ने वर्तमान सिरोही नगर की स्थापना की।
- मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने सहसमल को पराजित किया तथा इस विजय के उपलक्ष्य में राणा कुम्भा ने अचलगढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया।
- सहसमल का उत्तराधिकारी लाखा देवड़ा हुआ।
- 1452 ई. में लाखा देवड़ा ने पावागढ़ (गुजरात) पर आक्रमण कर वहाँ से कालिका माता की मूर्ति को सिरोही स्थापित किया और लाखनाव तालाब का निर्माण करवाया।
- लाखा का उत्तराधिकारी जगमाल हुआ।
- जगमाल के समय मेवाड़ का महाराणा रायमल था।
- बहलोल लोदी के मेवाड़ आक्रमण (1474 ई.) के समय जगमाल ने मेवाड़ के महाराणा रायमल का साथ दिया।
- जगमाल ने जालोर के मलिक मजीद खाँ को पराजित किया था।
- 1575 ई. में सुरताण देवड़ा ने अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- 1583 ई. में सुरताण देवड़ा ने 'दत्ताणी युद्ध' में जगमाल सिसोदिया को हराया था।
- सुरताण देवड़ा के दरबारी कवि दुरसा आढ़ा ने 'राव सुरताणा कवित्त' पुस्तक लिखी।

- 1823 ई. में शिवसिंह ने अंग्रेजों के साथ ईस्ट इण्डिया कंपनी से संधि कर ली थी।
- अत: यह अंग्रेजों के साथ संधि करने वाली अंतिम रियासत थी।
- सिरोही चौहान वंश का अंतिम शासक अभयसिंह देवड़ा था।

हाड़ौती के चौहान

- हाड़ौती क्षेत्र में हाड़ा चौहान शासन करते थे इसलिए यह क्षेत्र हाड़ौती क्षेत्र कहलाया।
- हाड़ौती क्षेत्र में वर्तमान बूँदी, कोटा एवं बाराँ के क्षेत्र आते हैं।
- प्रारम्भ में इस क्षेत्र में मीणा जाति का अधिकार था।
- कुंभा कालीन 'राणपुर लेख' में बूँदी का नाम 'वृंदावती' मिलता है।

देवा हाड़ा

- देवा हाड़ा प्रारंभ में मेवाड़ स्थित 'बम्बावदे' का सामंत और नाडोल चौहानों का वंशज था।
- 1241 ई. में मीणाओं से बूँदी को छीनकर बूँदी राज्य की स्थापना की।
- देवा हाड़ा के उत्तराधिकारी समरसिंह हाड़ा ने 1264 ई. में कोटिया शाखा के भीलों को पराजित कर कोटा पर अधिकार किया था।
- 1354 ई. में बूँदी के शासक बरसिंह हाड़ा ने बूँदी के तारागढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया।

राव सुर्जन हाड़ा (1554-1585 ई.)

- 1568 ई. में राव सुर्जन हाड़ा ने बूँदी को मेवाड़ रियासत से स्वतंत्र किया।
- सुर्जन हाड़ा ने रणथम्भौर दुर्ग पर अधिकार किया।
- 1569 ई. में सुर्जन हाड़ा ने रणथम्भौर दुर्ग में अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- मुगल सम्राट अकबर ने सुर्जन हाड़ा को रावराजा की उपाधि व 5 हजार मनसब दी।
- सुर्जन हाड़ा के दरबार में विद्वान कवि चंद्रशेखर था।
- इन्होंने द्वारिकापुरी में रणछोड़ जी का मंदिर बनवाया।

रतनसिंह हाड़ा (1607-1631 ई.)

- रतनसिंह हाड़ा को जहाँगीर ने 'रामराजा', 'सरबुलंदराय' की उपाधियाँ दी थी।
- इन्होंने खुर्रम के विद्रोह को दबाने के लिए दक्षिण भारत जाकर उसे बंदी बनाकर जेल में डाल दिया।

बुद्धसिंह (1695-1730 ई.)

- यह राव अनिरुद्ध सिंह का ज्येष्ठ पुत्र था।
- 1699 ई. में अनिरुद्ध की रानी नाथावती ने राणीजी की बावड़ी का निर्माण करवाया।
- मुगल बादशाह फर्रुखशियर के समय बुद्धसिंह के जयपुर नरेश जयसिंह के खिलाफ अभियान पर न जाने के कारण बूँदी का राज्य कोटा नरेश भीमसिंह को दे दिया और बूँदी का नाम बदलकर 'फर्रुखाबाद' कर दिया।
- राजस्थान में मराठों का सर्वप्रथम हस्तक्षेप बूँदी में हुआ।

उम्मेदसिंह (1749-1770 ई.)

- इन्होंने 'श्रीजी' की उपाधि धारण की।
- इन्होंने तारागढ़ दुर्ग (बूँदी) में 'चित्रशाला' की स्थापना की।
- इनको एक राजा ने घोड़ा भेंट किया जिसका नाम 'हूंजा' था।
- 1818 ई. में बूँदी के शासक विष्णुसिंह ने मराठों से सुरक्षा हेतु ईस्ट कंपनी से संधि कर ली।
- बूँदी का अन्तिम शासक बहादुर सिंह हाड़ा था।
- 25 मार्च, 1948 को बूँदी का विलय राजस्थान संघ में कर दिया गया।

कोटा के चौहान

- जैत्रसिंह हाड़ा ने कोटिया भील को हराकर कोटा पर अधिकार किया था और कोटिया भील के नाम पर इस राज्य का नाम कोटा रखा।
- कोटा प्रारम्भ में बूँदी रियासत का ही भाग था।
- हृदय नारायण हाड़ा बूँदी के शासकों के अधीनस्थ था।
- यहाँ पर ऐतिहासिक काल में कृष्ण भक्ति का प्रभाव था इसलिए कोटा का नाम 'नंदग्राम' भी मिलता है।
- बूँदी शासक राव भोज ने अपने पुत्र हृदय नारायण को अकबर की स्वीकृति से कोटा का शासक नियुक्त किया था।
- मुगल स्वीकृति से कोटा राज्य का स्वतंत्र अस्तित्व हुआ।
- झूमी के युद्ध (1623 ई.) में हृदय नारायण ने जहाँगीर का साथ छोड़ दिया था। इस कारण जहाँगीर ने हृदय नारायण से कोटा को छीन लिया।

माधोसिंह (1631-1648 ई.)

- 1631 ई. में बूँदी के राव रतनसिंह के पुत्र माधोसिंह शासक बना। यहीं से कोटा में चौहानों की हाड़ा शाखा की स्थापना होती है।
- इसके शासनकाल में मुगल राज्य की दृष्टि में हाड़ौती की शक्ति का केन्द्र कोटा था।

मुकुन्दसिंह (1648-1658 ई.)

- राव माधोसिंह का उत्तराधिकारी मुकुन्दसिंह हुआ।
- इन्होंने मुकुन्दरा हिल्स में 'अबली-मीणी' का महल बनवाया, जिसे राजस्थान का 'दूसरा ताजमहल' कहते हैं।
- 1658 ई. में मुगलों के उत्तराधिकारी युद्ध में शामिल हुए और धरमत के युद्ध में शाही सेना की तरफ से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

रावकिशोर सिंह (1684-1696 ई.)

- इन्होंने किशोर सागर तालाब व चांदखेड़ी के जैन मन्दिर का निर्माण करवाया।

रामसिंह हाड़ा-प्रथम (1696-1707 ई.)

- रामसिंह 'भड़भूज्या' के नाम से भी प्रसिद्ध हुए।
- इसने मराठा शासक राजाराम व औरंगजेब के मध्य समझौता कराने का प्रयास किया था।
- 1707 ई. में जजाऊ के युद्ध में आजम की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

भीमसिंह (1707-1720 ई.)

- मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने इनको पाँच हजार मनसब प्रदान की।
- इन्होंने 1713 ई. में बूँदी पर आक्रमण कर राजकोष, धूलवाणी व कड़क बिजली तोपें छीनकर लाया था।
- भीमसिंह कोटा का पहला शासक था जिसने पाँच हजार मनसब प्राप्त की तथा महाराव की उपाधि धारण की।
- इनके समय कोटा राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ था।

महाराव दुर्जनशाल (1723-56 ई.)
- यह कोटा का अन्तिम का शासक था जिसके मुगलों से अच्छे सम्बन्ध थे।
- इसके समय में कोटा राज्य पर मुगल प्रभाव समाप्त होकर मराठा प्रभाव स्थापित हुआ था।
- यह अपने बड़े भाई श्यामसिंह से उदपुरिया के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने हुरड़ा सम्मेलन में भी भाग लिया था।

महाराव शत्रुसाल-प्रथम (1756-64 ई.)
- 1761 ई. में जयपुर के महाराजा सवाई माधोसिंह प्रथम को भटवाड़ा के युद्ध (बाराँ) में पराजित किया।
- इस युद्ध में शत्रुसाल का सेनापति झाला जालिमसिंह था।

महाराव उम्मेद सिंह (1770-1819 ई.)
- इसने 1817 ई. को अंग्रेजों से सन्धि की थी।
- इसके समय कोटा के दीवान जालिमसिंह ने अंग्रेजों से 1818 ई. में एक गुप्त संधि की थी जिसके तहत राज्य की प्रशासनिक सत्ता वंशानुगत रूप से अपने परिवार के लिए सुरक्षित कर ली थी।

महाराव किशोरसिंह (1819-1828 ई.)
- प्रशासनिक शक्तियों को लेकर झाला जालिमसिंह व महाराव किशोरसिंह के मध्य मतभेद हो गया था।

मांगरोल का युद्ध (1821 ई.)
- यह युद्ध कोटा के महाराव किशोरसिंह और कोटा के दीवान झाला जालिमसिंह के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में अंग्रेजों का सहयोग (कर्नल टॉड) झाला जालिमसिंह को मिला था, इस युद्ध में किशोरसिंह पराजित हुआ था।
- झाला जालिमसिंह और महाराव किशोरसिंह के मध्य 22 नवंबर, 1821 को मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने समझौता करवाया।

महाराव रामसिंह-द्वितीय (1828-65 ई.)
- इनके समय अंग्रेजों ने 1837 ई. में कोटा से 17 परगने अलग कर झालावाड़ राज्य की स्थापना की थी तथा झाला मदनसिंह को शासक नियुक्त किया था।
- 1857 की क्रांति में जयदयाल व मेहराब खाँ के नेतृत्व में जनता ने इसको कोटा के किले में नजर बंद कर दिया था।
- इस क्रांति में रामसिंह-द्वितीय की असफलता के कारण अंग्रेजों ने इनकी तोपों की सलामी 17 से घटाकर 13 कर दी थी।

महाराव उम्मेदसिंह-द्वितीय (1888-1940 ई.)
- इसने मेयो कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी।
- इनके समय जो कोटा के 17 परगने जो झालावाड़ को दिए थे उनमें से 15 परगने कोटा राज्य को वापिस मिल गये थे।

महाराव भीमसिंह (1940-48 ई.)
- कोटा चौहान वंश का अंतिम शासक महाराव भीमसिंह था।
- इनके समय कोटा का विलय संयुक्त राजस्थान में 25 मार्च, 1948 को किया गया तथा कोटा को संयुक्त राजस्थान की राजधानी बनाई।
- महाराव भीमसिंह को संयुक्त राजस्थान का राजप्रमुख बनाया गया।

झालावाड़ के चौहान

- परमार शिलालेख के अनुसार 11वीं-12वीं सदी में झालावाड़ क्षेत्र में परमारों का शासन था।
- बूँदी के शासक सुर्जन सिंह हाड़ा ने इस क्षेत्र पर हाड़ा वंश का शासन स्थापित किया था लेकिन कुछ समय बाद यह क्षेत्र मुगलों ने अपने अधीन ले लिया था।
- कोटा के महाराव रामसिंह-द्वितीय के समय अंग्रेजों ने 1837 ई. में कोटा से 17 परगने अलग कर झालावाड़ राज्य की स्थापना की थी तथा झाला मदनसिंह को शासक नियुक्त किया था।
- अंग्रेजों ने मदनसिंह झाला को 'राजराणा' की उपाधि प्रदान की।
- झालामदन सिंह ने 1838 ई. में अंग्रेजों से संधि की थी।
- 1857 की क्रांति के समय झालावाड़ का शासक पृथ्वीसिंह था।
- इनके समय में 1862 ई. में अंग्रेजों ने झालावाड़ रियासत को उत्तराधिकारी गोद लेने का अधिकार दिया था।
- वर्ष 1921 में राजराणा भवानीसिंह ने 'भवानी नाट्यशाला' की स्थापना की।
- वर्ष 1929 में राजराणा राजेंद्रसिंह ने सर्वप्रथम दलितों को मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति दी।
- वर्ष 1930 में राजराणा राजेंद्रसिंह ने प्रथम गोलमेज सम्मेलन में दर्शक के रूप में सम्मिलित हुए।
- राजस्थान के एकीकरण के समय झालावाड़ का शासक हरिश्चंद्र था।
- झालावाड़ रियासत का विलय राजस्थान संघ में हुआ।
- इस शाखा का अंतिम शासक राजराणा हरिश्चन्द्र था।

गुहिल राजवंश

- मेवाड़ राज्य में गुहिल राजवंश ने शासन किया था।
- गुहिल वंश का नामकरण इनके प्रतापी शासक गुहिल के नाम से हुआ तथा बाद में यह वंश गहलोत भी कहलाया था।
- कर्नल जेम्स टॉड की 'एनल्स एण्ड एंटिक्विटिज ऑफ राजस्थान' तथा श्यामलदास के 'वीर विनोद' में इस राजवंश का उद्भव गुजरात के वल्लभी से माना गया है।
- यह विश्व में सर्वाधिक समय तक एक ही क्षेत्र पर राज्य करने वाला वंश है जो वर्तमान उदयपुर संभाग में है।
- G.H. ओझा ने इस वंश को मूल रूप से 'सूर्यवंशी' माना हैं।
- महाराणा को 'हिन्दुआ सूरज' भी कहा जाता है।
- मेवाड़ के राज्य चिह्न पर अंकित है कि -"जो दृढ़ राखे धर्म को, ताहि रखे करतार"।
- इस वंश का संस्थापक 'गुहिल या गुहे दत्त' को माना जाता है, जिसने 566 ई. में इस वंश की स्थापना की।

गुहिल
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार वल्लभी के राजा शिलादित्य और रानी पुष्पावती का पुत्र गुहादित्य था जिसे नागर ब्राह्मणों ने पाल पोस कर बड़ा किया।
- डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार 566 ई. में लगभग गुहिल ने अपना शासन स्थापित किया था।
- गुहिल के बाद सबसे प्रतापी शासक बप्पा रावल हुए।
- गुहिलादित्य गुहिल वंश का संस्थापक/मूलपुरुष/आदिपुरुष कहलाता है, जिनका प्रारंभिक राज्य नागदा के आस-पास था।

सिलेक्शन के लिए जरूरत हैं
दमदार तैयारी की

New Course Launch

LIVE FROM CLASSROOM BATCH

जेल प्रहरी 2025

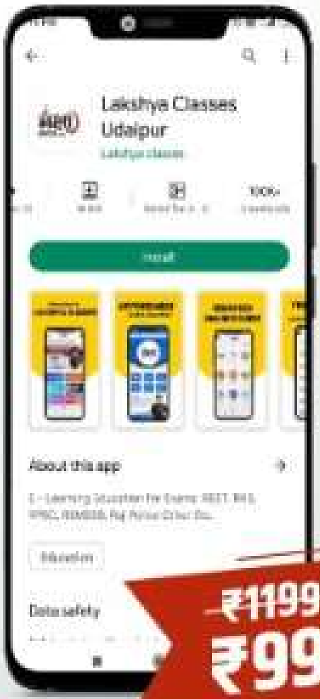

LIVE कोर्स के साथ में पाएं
FREE RECORDED COURSES

~~₹11999/-~~
₹999/-

• LAUNCHING SOON •

INSTAGRAM FACEBOOK YOUTUBE TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 6376957258, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur